श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्‌बोधन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 137वें बलिदान दिवस पर संगोष्ठी

दिनांक –30 अक्टूबर, 2019 **समय – प्रातः 10 : 30 बजे**

स्थान – महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सर्वप्रथम विश्वविद्यालय प्रशासन को इस संगोष्ठी के आयोजन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ। सभा भवन में उपस्थित विद्वानों को देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह मेरे लिए परम सौभाग्य का अवसर है कि पुनर्जागरण के पुरोधा, समग्र क्रांति के अग्रदूत और महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती के नाम से विख्यात इस विश्वविद्यालय के परिसर में उनके 137 वें बलिदान दिवस पर उनके आदर्शों को आत्मसात करने के लिए आज हम यहां एकत्रित हुए हैं।

मुझे इस बात से भी बड़ी प्रसन्नता हुई है कि यहाँ महर्षि के नाम से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा महर्षि दयानंद शोध पीठ भी स्थापित की गई है। मुझे ज्ञात हुआ कि महर्षि दयानंद शोधपीठ द्वारा विगत तीन वर्षों से निरंतर राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। यह सराहनीय है।

महर्षि जी के उपदेशों की गूँज संपूर्ण अजमेर क्षेत्र में सुनाई देती है। महर्षि दयानंद सरस्वती देश के स्वाधीनता संग्राम में राजाओं को जोड़ने के लिए तथा धार्मिक व सामाजिक सुधार के लिए सम्पूर्ण भारत में भ्रमण कर रहे थे, तब वे अजमेर क्षेत्र में छः बार आये थे।

इस बीच वे अपने शिष्य मसूदा नरेश राव बहादुर सिंह के यहाँ सोनमगरी पहाड़ी पर ठहरे। नसीराबाद छावनी के निकट भूताखेड़ी उद्यान में रहे। किशनगढ़ में नवग्रह मंदिर के निकट सुखसागर बाग में भी ठहरे तथा इसी प्रकार विश्वप्रसिद्ध तीर्थस्थल ब्रह्मा जी के मंदिर में रहे और पुष्कर सरोवर के कोटा घाट व जोधपुर घाट पर उन्होंने साधना की।

अजमेर नगर स्थित सेठ रामप्रसाद करणीदान के बाग में, दौलत बाग में, बंसीलाल सरिश्तेदार का बाग, सेठ फतहमल की कोठी, नहर मोहल्ला स्थित सेठ गजमल की हवेली व नोहरा, लाखन कोठड़ी, दर्जी मोहल्ला एवं पुरानी मंडी स्थित मसूदा हवेली इत्यादि शहर के वे पावन स्थान हैं, जहाँ महर्षि जी के अनेक प्रवचन, उपदेश व शास्त्रार्थ हुए।

जीवन के अंतिम दिनों में वे भिनाय के राजा की कोठी में रहे। जहाँ उनका 30 अक्टूबर, 1883 को निर्वाण हुआ तथा पहाडगंज स्थित मलूसर श्मशान में वैदिक रीति से उनकी अंत्येष्टि हुई। महर्षि ने जीवित रहते अपने स्वीकार पत्र में स्वयं की अन्त्येष्टि व उसके बाद के कर्त्तव्यों के विषय में जो लिखा, उसके अनुसार ही स्थानीय आर्यजनों ने वैदिक विधि से अंत्येष्टि के उपरांत उनकी अस्थियों को शाहपुरा भीलवाडा के राजा सर नाहर सिंह जी द्वारा प्रदत्त बाग ऋषि उद्यान में संरक्षित किया व भस्म को इसी उद्यान के खेतों में बिखेर दिया।

आनासागर झील के किनारे स्थित इस आश्रम में तब से आज तक निरंतर महर्षि दयानंद सरस्वती के ग्रन्थों का पठन–पाठन एवं हवन, संध्याएं, वेदपाठ, प्रवचनादि होते हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती से जुड़े हुए इन सभी ऐतिहासिक पुरा महत्व के स्थलों का ज्ञान, सभी लोगों को हो सके, इसके लिए इनका संरक्षण आवश्यक है। राजस्थान सरकार यहाँ के अनेक स्थलों को चिह्नित कर ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सहेजने के लिए विचार कर सकती है।

यह जानकर आपको सुखद आश्चर्य होगा कि एक तो महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा अपनी उत्तराधिकारिणी के रूप में स्थापित परोपकारिणी सभाएं, जिसमें भारत के प्रमुख राज्यों के राजा–महाराजा सदस्य थे तथा दूसरा उनके जीवनकाल में ही संचालित हुए आर्यसमाज ने स्वाधीनता संग्राम में भी सक्रिय भूमिका अदा की थी। संभवतः यहाँ पर उपस्थित अनेक विद्वानों में वे लोग मौजूद होंगे, जिन्होंने पंडित जियालाल आर्य एवं श्रीकरण शारदा के नेतृत्व में हैदराबाद सत्याग्रह के लिए आर्य क्रांतिकारियों से भरी दो रेलगाड़ियाँ को जाते हुए देखा होगा।

भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास को पढ़ने पर यह ज्ञात होता है कि महर्षि दयानंद सरस्वती के गुरू विजानन्द दंडी व स्वयं युवा सन्यासी महर्षि दयानंद सरस्वती ने 1857 की क्रान्ति में भी अपना सक्रिय योगदान दिया।

1875 में महर्षि दयानंद सरस्वती ने मुंबई में प्रथम आर्यसमाज स्थापित किया, जिसके उपरांत देश विदेश में हजारों आर्यसमाज खोले गए। इन आर्यसमाजों के प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव से भारत को 80 प्रतिशत से अधिक क्रान्तिकारी मिले। इनमें लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानंद, पंडित लेखराम, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, स्वामी स्वतंत्रतानन्द आदि तो प्रमुख थे ही, उन्हीं में से प्रमुख दो क्रांतिकारी सरदार भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद ने अजमेर के आर्य नेताओं से न केवल क्रान्ति मंत्रणा की, बल्कि आर्य समाज अजमेर के चांदबावड़ी स्थित अनाथालय एवं आर्यसमाज के ही कुछ विशेष स्थलों पर शरण भी ली।

जिन दिनों महर्षि दयानंद सरस्वती, महाराज अजमेर के नहर मोहल्ला स्थित सेठ गजमल की हवेली में प्रवचन करते थे, उन्हीं दिनों एक बालक हरविलास शारदा अपने पिता के साथ उपदेश सुनने आया करते थे। एक दिन जब ब्रह्मचर्य के महत्व पर महर्षि का प्रवचन था, तब यह बालक भी अपने पिता जी के साथ उपस्थित था। इस व्याख्यान में बाल विवाह के दोष गिनाते हुए महर्षि ने इस कुरीति को बंद करने का आह्वान किया, बालक हरविलास के मन पर इसका गहरा असर पड़ा। कालांतर में उन्हीं ने बाल विवाह निरोधी कानून बनवाया, जिसे आज भी शारदा एक्ट के रूप में जाना जाता है।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने अजमेर क्षेत्र में उन घटनाओं को भी देखा जब लोगों को लोभ, लालच, भय दिखाकर व भ्रमित कर धर्मातंरण किया जाता था। तब महर्षि के अनेक शास्त्रार्थ अजमेर में हुए जिनमें कोई भी प्रतिपक्षी महर्षि के तर्कों का खंडन नहीं कर सका था। मसूदा के जैन भाइयों ने तो सोनमगरी पहाड़ी पर महर्षि के सान्निध्य में यज्ञ कर यज्ञोपवीत धारण किए व वैदिक धर्म अपनाया था।

महर्षि दयानंद सरस्वती का उद्देश्य न केवल सामाजिक विकृतियों को दूर करना था, बल्कि धार्मिक पाखंडों अन्धविश्वासों के खंडन के साथ–साथ देशी राजाओं की आपसी फूट को दूर कर सम्पूर्ण क्रांति का बिगुल बजाना भी था।

निरीह प्राणियों का वध करना, उनकी बलि देना एक ऐसा धार्मिक पाखंड बन चुका था, जिसे दूर करना बहुत कठिन था। महर्षि ने सोचा कि बलि कर्म को लोग कर्मकांड मानते हैं तथा कर्मकांड का सर्वोच्च प्रमाण यजुर्वेद को माना जाता हैं। अतः निरीह प्राणियों कि रक्षा के लिए सर्वप्रथम यजुर्वेद का भाष्य किया जाना चाहिए और उन्होंने वैसा ही किया। इस भाष्य के बाद वेद में बलि विधान की झूठी धारणा को कभी भी सिद्ध नहीं किया जा सका।

महर्षि दयानंद सरस्वती का वेदभाष्य ऋषियों की प्राचीन परंपरा के अनुरूप है तथा उन्हीं का भाष्य विज्ञान के विभिन्न आविष्कारों का सबसे प्रामाणिक स्तंभ भी बना हुआ है। राइट बंधुओं से 8 वर्ष पहले 1895 में विमान बनाने वाले शिवंकर बापूजी तलपदे महर्षि दयानंद व उनके साहित्य से अत्यधिक प्रभावित थे।

महर्षि दयानंद सरस्वती के द्वारा लिखे सत्यार्थ प्रकाश ने गलत धारणाओं को उखाड़ कर फेंका। जो लोग भारत के धार्मिक ग्रन्थों का मजाक उड़ाते थे, उन सब लोगों को इन ग्रंथों के माध्यम से महर्षि ने मुँह तोड़ जवाब दिया। यही कारण था महर्षि से प्रभावित होकर न्यूयॉर्क से संचालित संस्था थियोसोफिकल सोसाइटी ने अपनी संस्था को आर्यसमाज के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया तथा वे महर्षि दयानंद सरस्वती को अपना गुरू, पिता, बड़ा भाई व आचार्य मानते थे। उन्हीं की भाँति बंगाल के केशवचंद्र सेन व राजाराम मोहन राय की सुधारवादी संस्था प्रार्थनासमाज व ब्रह्मसमाज का भी विलय आर्यसमाज में हो गया था।

इतना ही नहीं, महर्षि दयानंद के अनेक अनुयायियों ने विदेश में जाकर भारत के स्वाधीनता संग्राम को अत्यधिक बल प्रदान किया। सन् 1875 में बम्बई में स्थापित हुए प्रथम आर्यसमाज के सबसे युवा सदस्य रहे श्यामजी कृष्ण वर्मा को उन्होंने विलायत में रहकर भारत के स्वाधीनता संग्राम को चलाने की प्रेरणा दी थी।

इसी कारण श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लंदन में इंडिया हाउस बनाकर देशी राजाओं की संतानों व विलायत में पढ़ने वाले भारतीय युवाओं को स्वाधीनता संग्राम में जोड़ने का प्रमुख कार्य किया।

दक्षिण अफ्रीका में भवानीदयाल सन्यासी, स्वामी शंकरानंद, भाई परमानंद ने तथा सऊदी अरब में पंडित रतिराम ने, सिद्धाराम ने अमेरिका में स्वदेशी संस्कृति और व्यापक क्रांति के अभियान को सक्रिय रखा।

विदेश में हिंदी प्रचार का कार्य सर्वप्रथम आर्यसमाज ने आरंभ किया । मॉरिशस, अमेरिका, त्रिनिदाद, फिजी, बर्मा, नेपाल व दक्षिण अफ्रीका आदि अनेक देशों में महर्षि के शिष्यों ने दो महत्वपूर्ण कार्य किए। उनका प्रथम उद्देश्य भारत की आजादी था और दूसरा प्रवासी भारतीयों में भारत की संस्कृति, सभ्यता, भाषा और संस्कार को सुरक्षित रखना था ।

विश्वविद्यालय ने वर्ष 2001 में संस्कृत वैदिक वाङ्मय का पाठ्यक्रम संचालित किया था। यह सराहनीय प्रयास है और प्रसन्नता की बात यह है कि इस विषय के पहले बैच के एक विद्यार्थी डॉ. मोक्षराज वॉशिंगटन स्थित भारतीय राजदूतावास में भारत की संस्कृति के प्रचार के लिए प्रथम सांस्कृतिक राजनयिक नियुक्त किए गए।

सारांश यह है कि गुजरात काठियावाड़ मोरवी राज्य के टंकारा में सन् 1824 में जन्मे बालक मूलशंकर, जो आगे जाकर महान सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती हुए, उनके कार्य मानवजाति के लिए सदैव आदर्श के रूप में रहेंगे। उनके संदर्भ में युवाओं को कहना चाहूंगा कि वे महर्षि दयानंद सरस्वती की जीवनी को पढ़ें और उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करें।

महर्षि दयानंद उच्च कोटि के योगी थे। अष्टांग योग के सभी लक्षण उनमें थे। वे महाबलशाली, दयालु, क्षमाशील व परम विद्वान थे। उनका व्यक्तित्व महान् तथा विशाल था।

समाज में अभी भी अनेक विकृतियां विद्यमान् हैं। अपने सामाजिक परिदृश्य में जातिवाद फिर से जड़ें जमाने लगा है। वर्गभेद नई परिभाषाओं के साथ सर उठा रहा है तथा अभी भी अनेक धार्मिक अंधविश्वास व्याप्त हैं। '' वेदों की ओर लौटो'' का महर्षि का उद्‍घोष आज भी हमें अपनी प्राचीन संस्कृति से जुड़ने के लिए आह्वान करता है। हमें अपनी योगविद्या तथा वेद से जुड़ी अध्यात्म की परम पावन संस्कृति को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। जो भी कारण राष्ट्र के विघटन के लिए पैदा किए जाते हो, उन्हें हतोत्साहित करने के लिए हम संवैधानिक रूप से संघर्ष के लिए सदैव उद्यत रहें ।

मैं, उन महान सुधारक को जो केवल सामाजिक क्रान्ति ही नहीं बल्कि समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थे, उनके यशस्वी तेजस्वी अमृत स्वरूप को हृदय से नमन करता हूँ।

देश के अलग–अलग प्रांतों से पधारे हुए आप सभी विद्वान आगामी सत्रों में महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों पर मंथन करेंगे और आने वाली पीढ़ी को सही दिशा देने के लिए मार्गदर्शन देंगे। ऐसा मुझे विश्वास है।

मैं आशा करता हूँ आने वाले दिनों में यह विश्वविद्यालय वैदिक वाङ्मय विषय एवं वैदिक पार्क की रचनात्मक योजनाओं को आगे बढ़ाएगा।

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी के लिए में पुनः शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।